

निमंत्रणाचा नेम!

युद्धसमाप्ती, तैवान, 'चिप्स'साठी दुर्मीळ खनिजे, 'एआय'वर नियंत्रण... यापैकी एकही विषय अमेरिकी अध्यक्षांनी चिनी अध्यक्षांपुढे घसास लावला नाही...

પ્રહૃત મોહી જાનિયો જાણ્યા સમાનાર્થી તેઓની આવીજાને કેલેલેલા થકા ચાચ્યાના, એટલે, એમાંની એક, પેન્કનિડા આદી થાતેલકા કંપનપ્રયે પ્રમુખ જા, મેજનકાંતર સંપર્કિયેલે હોયે, જા ંનોત્પત્તિચરિત્ર કેસરે કૃતિમ પ્રત્યેજા (આય) થાલેના અઢકાનવાન પાત્રે હોઈએ અર્થે અર્થાલે હોયે, જા મુદરવાવ અમેરિકા આજી વાંતે અર્થે સુકે અદે, તમા પ્રમ્મ વ્યાંતે જા કુદરસા કાઠી હોતે થાલેલે નાકાઈ, જા થકડા જાનિયોનાં થાખાળાં ટૂંક બોલુને બોલતો કાઠાઈવળે ૨' 'ઢાક્ટર ઢાક્ટર' જા એક ઢાકે પાઠુને થોડે તે અગર અમલેલ્યા ન્યાયે 'બંલકમ' વિશ્વયી ૧' તેઢેકે થે બોલુને થાંબીતલો ટેરે ટૂંક કમલે ૧' વાંતેની પરિચયથા માન્યવાન્યા, જા ન્યયને અકારાસે વાંતે અકારાસેલે થાકાસે મેરે દેખાચો વાંતલેલે ૧' 'જા કસલો ડરલેન થાકાસે મુઠેલી પાત્રીતે અસેલે', હે દમચો વાંતે અગર, તે ઇગુને નુકાળે અમેરિકાનાં પાલે થકા ડાલે અડતે, ત્યાંપ્રકાશ ડીરિસાસાં થલચીલે પાલે ડેલેલે પ્રભાવે વિના વિતા થલેલી અસેલે, ડીરિસાસા થા થલતલા પ્રભાવે જાનિયો વાંતે થલચુન દેલેલા, આલ્યા થાખાખાં વ્યાંતેની પ્રમત્તા જાણુને થેચ્યેયે નિમત્રણે દેલે, હી થાકા થકાદકાદકા અગરપાડી કી સાથણ સાર્ડેનીને ઢકાપુઝીં અમેરિકેયે તેલકાળીને અગરપાડે વિના જિમી કાંતે વાંતેની ત્યાંચેલી એક લાખ વિતે વિશ્વધાર્યાનાં અમેરિકેયે યેઝુન 'મોકલ્મ થ્યાસ' થેચ્યાના અંદર થકા અસેલે તે અનુવચ્યેયે આઘાતકેલે હોતે, આજ વાંતે અર્થે અમેરિકા અમેરિકા વિશ્વધાર્યાં અસે નિમિત્રણે દેલે, હા નિમિત્રણના નેરે થલચ્યાના જાણુને થારસથ થલચુન દેલે, ત્યાંચો ડોરે અગરપાડાંનાં આચ્યકે

‘जंतर-मंतर २.०’च्या रेड्याची प्रतीक्षा...

अन्वयार्थ
भाजपचा स्वायत्तताविरोधी
चेहरा उघड...

व्यवस्थापनेची मागणी जन्म - कायमर तसेच लाडखवा या दोन्ही केशराप्रति प्रेक्षांशून वाढावे वजाई जाऊ. जन्म-कायमर प्रेक्षापेक्षा किमान विमानमात्रा अतिरिक्तता आहे, लाडखमामध्ये तेच नसत नाही. लाडखलातील प्रेक्षा गायान्या लाडखेच्या कडच्या परिक्षित्वात येवकारात होण्याच्या मागण्या केले जातात. हेही केशराप्रति प्रेक्षांशून वाढावे वजाई जाऊ. साकू लुईस करत असल्याचेच लाडखामध्ये येण्या वजाई हिक्क ओलेसना झाली. लाडखी चौघांचा मागणी झाला. ओलेकडेच लाडखलातील लोकांप्रति प्रेक्षांशून राजपट आणण्याची तयारी केली होती. दाखलीकडे असली तरी तसे अधिकच नावभ गायान्यालाच हादीतच घडाली.

व्यवस्थितकालावधानाच्या हलका घडवटा २०१९ मध्ये जन्म-कायमर हा इदरेत तसेच जन्म-कायमर, लाडखी यांचा पुरतंत्रना प नेमडयुक्ता पार पडल्यावर गायान्या जन्म नही केले होते. आयावसत खंड तर आता पाडव्याचे वार, तरच कड्यातून पाडव्याची आयावसना समजावता विसरे. आरोग्य, ज्योतिरुत्पत्ती यांहीच अधिकच जन्म-कायमराला सल्ल्याचे पार म्हाणत, यातून भाजुलला काय हवे? असे? भाज आयावसनात थकवत पाडव्या, कायमरामधील राजकायामधील कितीही अडक रेकी तरी व्यवस्थात आणाय गायान्या जन्म हलक अमलत येण्याची शक्यता घडवत विसरे.

हक्कती कधीपर्यंत मोंदवता येतील ?

विद्यमान काळा मुद्दे संपर्ष्यत ज्ञाना निवर्मानुसार चालतील. मा.प्रकारणीची क्षमता किंवा रचना बदलल्यास, अथवा मोजणीची पद्धत बदलल्यास नवे नियम लागू होऊ शकतात. जुन्या प्रकारच्यांचे लागू सुविधा देवून नवे नियम केवळ वाढते क्षमता लागू करावेत, असे बुद्धी याचें म्हणणे आहे. बीजतज्ज्ञ अशोक पेंडसे यांच्या मते, लाभ करी शिल्ल्यास नवे ग्राहकांच्या प्रकल्प यांच्यासाठी नियमवर्धन परिणाम होऊ शकतो. आयोगाने २२ ऑक्टोबर २०१६ पर्यंत हक्कती मागवल्या आहेत. अंतिम नियम आणि शुल्कांचे बदल ठरल्यानंतरच देवाकडालील नेमाका परिणाम स्पष्ट होईल.



राहुल ताल

आर्थिक मामलों के
जानकार

आधुनिक बाजार आधारित अर्थव्यवस्था में वित्तीय संरचना, विशेषकर बैंक केवल मुद्रा के लेन-देन के क्षेत्र नहीं हैं, आर्थिक तंत्र को धमनीयों के समान हैं। जब इन धमनीयों में नतिगत गतिरोध या कर्मचारियों के असंतोष के चलते प्रवाह अवरुद्ध होता है, तो उसका असर चेक क्लियरिंग या नकद निक्कासी सीमाओं को लॉकर खट्ट के समझना आर्थिक संकेत व उत्पादकता पर पड़ता है।

12वें द्विपक्षीय वित्त समझौते के तहत उपरो 'पांच दिवसीय कार्य-सप्ताह' और फेशन अपडेशन के संवेदनशील मुद्दों ने आज इसी भारतीय वित्तीय तंत्र को एक अभूतपूर्व त्रिकोणीय गतिरोध के मुखे पर ला खड़ा किया है। जहाँ एक ओर बैंक युनिवर्स का दबाव है कि दैनिक कार्य-सप्ताह में 40-45 मिनट के विकल्प के बदले सभी शनिवार के अवकाश पर प्रबंधन स्तर पर सामंजस्य बनें थी, वहीं दूसरे सरकारी ने इस प्रश्न को किसी भी बाध्यकारी या औपचारिक सहमति को स्वरूप रूप से खारिज करते हुए इसे केवल 'चिन्तापूर्ण' प्रस्ताव माना है। सरकारी के इस दृष्टिकोण, जहाँ से संवित्त फेशन विभागियों और शाखा स्तर पर बड़े असमान्य कार्यभार ने कर्मचारियों के असंतोष को एडवांस्ड हड़ताल के संकल्प में बदल दिया है। 24 घंटे सत्रिय डिजिटल एर्युआल लेन-देन के दौर में यह गतिरोध केवल वृद्धियों या धनी का साधारण विकार नहीं है, बल्कि भारतीय बैंकिंग के दोहरे चक्र का गहरा नतीजा संकेत है- जहाँ एक ओर व्यवस्था से कोटिपट्ट मुद्रा के साथ-साथ गैर लाकरबीज वित्तीय समावेशन की अपेक्षा को जोता है।

कैंडिडाट से जनाई: आरबीआइ, भारतीय रिजर्व बैंक प्रभुता निम्न तब उठाया संभ्रमण के संकेतित आंकड़ों के अनुसार, सर्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की हड़ताल से प्रतिदिन औसतन 15 हजार करोड़ से 20 हजार करोड़ रुपये के चेक क्लियरिंग अवरुद्ध होते हैं। तीन दिनों में लगभग 60 लाख चेक अटक जाते हैं, जिनका कुल मूल्य 50 हजार करोड़ से 60 हजार करोड़ रुपये के आसपास होता है। इसके अतिरिक्त, कार्यालयी पूंजी के अवरोध, आयात-निर्यात से जुड़े सख्त पत्रों के रुकने और बैंकरोहों पर लगने वाले देवदार शुरू के चलते अर्थव्यवस्था को प्रतिदिन एक हजार करोड़ से डेढ़ हजार करोड़ रुपये का अप्रत्यक्ष नुकसान होता है। करीबी चेक

बैंक हड़ताल

नियोक्ता व कर्मचारी के बीच का विवाद

देश भर में सार्वजनिक बैंकों के कर्मचारी और अधिकारी 28 से 30 सितंबर तक तीन दिन की हड़ताल पर नहीं रहेंगे। यह हड़ताल युनाइटेड फ्रॉम आफ बैंक यूनियंस (यूएफबीयू) ने बुलाई थी। यूएफबीयू बैंक कर्मचारियों और अधिकारियों की सात यूनियनों का साझा मंच है जो 90 प्रतिशत से ज्यादा कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व करता है। वैसे बैंकों की हड़ताल केवल नियोक्ता-कर्मचारी विवाद नहीं है, यह सामाजिक सुरक्षा, राज्य के दायित्व, वित्तीय समावेशन, कारपोरेट दक्षता और श्रमिक अधिकारों के बीच टकराव का भी जटिल मंच है

बंद होने से हड़ताल के तीसरे दिन तक कर्मचारी व ग्रामीण अंचलों के लगभग 40 प्रतिशत से अधिक एटीएम-कनेक्शन-विहीन (ड्राई) हो जाते हैं, जिससे असंतिष्ठ क्षेत्र को तत्काल प्रभावित होती है।

पांच दिवसीय कार्य-सप्ताह: कर्मचारियों का सबसे प्रमुख और लंबित मुद्दा प्रति सप्ताह पांच कार्य दिवस का है। कर्मचारियों का तर्क है कि कारपोरेट क्षेत्र, सॉफ्टवेयर उद्योग, आरबीआइ, भारतीय जीवन बीमा निगम और अधिकारी केन्द्रिय सरकारी कारखानों में शनिवार और शनिवार का अवकाश होता है। इसी तरह उनका भी पांच दिवसीय कार्य सप्ताह हो। बैंकों में वर्तमान व्यवस्था के तहत दूसरे और चौथे शनिवार को अवकाश मिलता है, जबकि पंचम, तीसरे और पांचवें के दिन ग्राहक पंचम आता है। शनिवार को पूर्ण कार्य दिवस होता है। कर्मचारियों का तर्क है कि डिजिटल बैंकिंग 24 घंटे संचालित रहती है, अतः शाखा स्तर पर शनिवार को सार्वजनिक लेन-देन बंद करने से जनजीवन प्रभावित नहीं होगा।

सरकार और बैंक प्रबंधन का मानन है कि भारत की अर्थव्यवस्था में असंतिष्ठित क्षेत्र, जैसे कारोबार, किसान और ग्रामीण आबादी का एक बड़ा हिस्सा आज भी मौखिक शाखाओं पर निर्भर है। लगातार वे डिजिटल बैंकिंग और शिखरों शाखाएं बंद होने से तत्काल लेन-देन, चेक क्लियरिंग और व्यापारिक गतिविधियों में व्यवधान आ सकता है। बैंक प्रबंधन के अनुसार व्यापारिक का नकद जमा और प्रत्यक्ष कृषि ऋण वितरण जैसे काम शनिवार को अधिक होते हैं। शनिवार की बंद से शाखा निजी क्षेत्रों या गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को और खराब कर सकते हैं, जिससे सार्वजनिक बैंक के खालू और बचत खाते का अनुपात गिर सकता है।

उपभार का दबाव: बैंक युनिवर्स का कहना है कि बंद होने से जन-योजना, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, अटल पेंशन योजना और सुकन्या समृद्धि जैसी दर्जनों सामाजिक योजनाओं का क्रियान्वयन सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के कर्मचारी पर डाला गया। इन कल्याणकारी योजनाओं ने कार्यभार कई गुना बढ़ा दिया, किंतु उस अनुपात में लियेकर्म और अधीनस्थ कर्मचारियों की नई भर्तियां नहीं हुईं। बैंक कर्मचारियों के संगठन यूएफबीयू के अनुसार, वर्ष 2012-13 में बैंक कर्मचारियों को संख्या 8.86 लाख थी, जो मार्च 2025 तक घटकर 7.58 लाख रह गई।

बैंक युनिवर्स के अनुसार, बैंक कर्मचारियों और अधिकारियों पर बर्दा-पाटी वित्तीय उत्पाद (बीमा पॉलिसियां, म्यूचुअल फंड आदि) बेचने का दबाव रहता है। इंटरनेट मोडिफाई और ऑनलाइन मंचों पर आए दिन जरूर अधिकारियों द्वारा कनिष्ठों से अप्रत्यक्ष व्यापार और मानसिक प्रताड़ना को घटाने पर सामने आती हैं। युनिवर्स का तर्क है कि 'बैंक' को 'सेलमैन' बना दिया गया है, जिससे उनका मूल काम प्रभावित होता है।

फैम अपडेशन: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में फेशन अपडेशन का मुद्दा दशकों से अटक है। पिछले सत्र के अंतिम दशक में सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों को युनिवर्स की बातचीत से तय होता है। यह प्रक्रिया अक्सर दो से तीन साल लंबित रहती है। कर्मचारियों का मानना है कि केंद्रीय वेतन आयोग के तहत अपने रिक्तियों को कर्मचारियों और अपने शांतिपूर्ण कार्यवाही वाले निजी वित्तीय



अभी लंबित मांगों के समर्थन में तीन दिन की हड़ताल पर सार्वजनिक बैंकों के कर्मचारी।

हड़ताल पर बैंक प्रबंधन और सरकार का पक्ष

बैंक प्रबंधन का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से इंडियन बैंक्स एसोसिएशन (आईबीए) और विधान बैंकों के वृद्धिकोण मुख्य रूप से राजकोषीय अनुसंधान, बैंकिंग क्षेत्र की दीर्घकालिक वित्तीय सुदृढ़ता और जनहित की रक्ष पर आधारित है। सरकार का मानना है कि सेवानिवृत्त कर्मियों को पेंशन को आरबीआइ की तर्ज पर अग्रतन करने या पुरानी पेंशन योजना बहाल करने से बैंकों पर भारी एकसूत्र अतिरिक्त प्रोब्लिमिंग करने से बैंकों को बेलेंस शीट कमजोर होगी और पूंजी पर्याप्तता अनुपात गिरने से उनकी ऋण देने की क्षमता पर पड़ता है। प्रबंधन कहता है कि बैंकिंग के अंतरिक्ष नियमित कार्यालय का काम नहीं है, यह सरकारी धन की दृष्टिगत है। अगर जैलेंट अग्रतन, मासिकता और रिक्तियों में जग भी दिलाई जाती जाए, इस्तीफा दे चुके पात्र कर्मियों को पेंशन विकल्प देने जैसी प्रमुख मांगों को व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य बनाए

रखने के लिए अनिवार्य है। **उद्देश्य सरकार का पक्ष:** बैंक हड़ताल को लेकर केंद्र सरकार का आधिकारिक वृद्धिकोण मुख्य रूप से राजकोषीय अनुसंधान, बैंकिंग क्षेत्र की दीर्घकालिक वित्तीय सुदृढ़ता और जनहित की रक्ष पर आधारित है। सरकार का मानना है कि सेवानिवृत्त कर्मियों को पेंशन को आरबीआइ की तर्ज पर अग्रतन करने या पुरानी पेंशन योजना बहाल करने से बैंकों पर भारी एकसूत्र अतिरिक्त प्रोब्लिमिंग करने से बैंकों को बेलेंस शीट कमजोर होगी और पूंजी पर्याप्तता अनुपात गिरने से उनकी ऋण देने की क्षमता पर पड़ता है। प्रबंधन कहता है कि बैंकिंग के अंतरिक्ष नियमित कार्यालय का काम नहीं है, यह सरकारी धन की दृष्टिगत है। अगर जैलेंट अग्रतन, मासिकता और रिक्तियों में जग भी दिलाई जाती जाए, इस्तीफा दे चुके पात्र कर्मियों को पेंशन विकल्प देने जैसी प्रमुख मांगों को व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य बनाए

को वित्तीय समावेशन और डिजिटली का संशोधन मानती है। अतः सरकार हड़ताल को आर्थिक प्रगति व गरीब तबके के अधिकारों में अवरोध मानकर मुख्य ध्रुम आयुक्त के वित्तीय द्विपक्षीय बचाव को ही एकमात्र समाधान मानती है।

निष्कर्ष: बैंक हड़ताल किसी एक पक्ष को जाल या हवा का विषय नहीं है, यह हमारे वित्तीय लोकतंत्र के भीतर चल रहे तनाव का धर्मपीठ है। कर्मचारियों को असमान्यता तब नहीं है, वे इसी राष्ट्र के नागरिक हैं जिनकी कोविड के भयावह दौर में भी अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर देखा के वित्तीय चक्र को धमने नहीं दिया। वहीं दूसरी ओर, प्रबंधन और सरकार की यह चिंता भी पूरी तरह जायज है कि बैंकिंग अनिवार्यताओं के इस दौर में बैंकिंग प्रणाली को संरक्षण क्षमता और जनता के विश्वास को किसी भी कोमल पर तब पर नहीं लाया जा सकता। (राहुल ताल)

खरी-खरी

आधा भीगा, आधा सूखा

मिमेंत गुप्त

हमारा शहर बड़ा समझदार हो गया है। शायद थोड़ा बहुत सेक्युलर भी। आधे शहर में बारिश हो रही है, आधे में धूप छिली है। बिस्कुल सरकार को योजनाओं को तरह-आधे-अधुरे जगह पहुंचती है, आधी जगह फाड़ती में लगे कागजों और नेटवर्क पर रह जाती है। नगर निगम खुश है। कह रहे हैं कि जलभंडार तो होगा, पर आधा ही होगा। आधी जनता हो गेली देरी। काम आधा कम हो गया। जिरफ बारिश हो रही है, उधर के बच्चे कागजी नाविक बने हुए हैं। उनका नक्ते चल रही है। नाली से सड़क तक, सड़क से घर तक। उनके लिए ये बाढ़ में तिरती महज नाव नहीं, कून है। वो उल्टे केप्टन हैं। और जिरफ बारिश नहीं हो रही, उधर के बच्चे कल्पना में रेत देना कर रहे हैं। बिना पानी के भीरो हवा। क्योंकि रेत में तो पानी आ ही जाता है। असली बारिश न रही, हिल्टर सलाही तो है। बारिश पानी हो रही, पर जनता को लगे तो कि बारिश हो रही है।

वैसे हमारा मोहल्ला तो और महान है। हमारी गली में एक तरफ छाता लगा है। डिस्को नीचे मोरी जी की जुगा गंतेज को दुसरा पिछली सवरी से सजती है। इसी तरफ एक घर को चारदीवारी पर गमछा सूख रहा है। एक हो चाय की दुकान पर दो तरह के कस्टमर हैं। एक पत्रा है, पत्रा, जलवे देना, भीरा जंगल। दूसरा कह रहा है, धीरे-धीरे बचओ, लॉक डाउन का मौल नतेने।

अब जब बाता मिला तो का आ हाई तो थोड़ा पीछे चलते हैं। पहले तो आधा-आधा बाला शहर असल में हम हो। आधे कागज की नाव चलते हुए। आधे कागज में नाचते हुए। आधी बांध में बेसन-प्याज लिए कैंडि हू। इस बार को बारिश वाह गुल खिलाएगी।

पोस्ट



आमर आध दूसरे लोगों के साथ धर्म, राष्ट्रीयता, राजनीति और उनके निजी जीवन पर चर्चा नहीं करते तो पापों की आगही जीवन में शांति का भाव कभी अधिक बढ़ जाएगा।

हो गेयनका @hvguonca

जिनको एक गैर-सरकारी आयोजन में पीपल मीटो में भजन-गीतों से सम्पन्न है। राष्ट्रपति भवन में सरकारी उद्देश्य से इस्तेमाल करता है। अब ये सब बंद है।

दिलीपा मंडाव @Profidimandal

एक और सुरक्ष की बात तो दूसरी और आदिक से बढ़ा, पाकिस्तान का खड़ी होकर आने पर पूरा दुनिया के समने है। भारत का संदेश खड़ा है आजादीवादी का संसधान देने वाली की जगहबंदी पूरी तरह से खत्म होगी।

रोहन गुप्ता @rohanugupta

हाल के घटनाक्रम ने निर्वाचन आयोग की सारा को लेकर जनभागीओ पर विचारों को बढ़ावा है। निजी चुनाव आयुक्तों को पारदर्शी, समझिले भाव और कानून के दायरे में रहकर काम करना होगा। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों की शैलिक के लिए चुनाव आयोग पर जनता का भरोसा अपरिहार्य है।

अशोक रमैयका @Aashokkhemka_IAS

जागरण जनमत

कल का परिणाम

यह उत्पन्न आधारित प्रोसाहन घापी पणाल आउर जेनी योजना देश म विमिमान गतिविधियों का कदम में सहकार की है?

23.3 नहीं 6.7 कह नहीं सकते

रमो अकडै बरिका मे

आज का संकेत

निर्वाचन आयोग की बैठक यह दशमि वाली रही कि आयोग में सब कुछ ठीकठा हो

परिणाम जगारा इन्टरनेट संसकला के चलाये जायत है

जनपथ

ममत वीर को 'एकता' बहुत आदी राह, धूम धूमकर चर रही होगी से परियाय।

लोनों से परियाय यथाम मे अने आओ, लोनों से परियाय दिख रहा, उने बाजो।

जब सारा हो हवा राध राधका नज्मा, अब ससको ले सय गहली लज्मा नज्मा,

-अभि प्रहारा विजयी



अजय शुक्ला
ajay.shukla
@lko.jagran
.com

उत्तर प्रदेश में राज्यसभा की 10

सीटों के लिए चुनाव आयोग ने

बोले शासन मजदुरों को लिखी घोषित कर

दी है। मंगलवार को इधेके लिए नामांकन

को प्रक्रिय शुरू हो जाएगी और 10

अक्टूबर को मतदान के साथ ही परिणाम

का आ जाएगा। ये चुनाव भारत के

सात सदस्यी-केंद्रीय मंत्री हरदिया सिंह

पुत्र, केंद्रीय राज्य मंत्री बोल्लू कर्मा,

संगठन में राष्ट्रीय महासचिव अरुण

सिंह, पूर्व प्रधानमंत्री प्रोफेसर के पुत्र

नरेश शर्मा, उत्तर प्रदेश के पूर्व सीएम

बजजाल, महिला कोष के सदस्य सोमा

होली। खी इस चुनाव का सबसे

विशेषता समाज हित और अंतर्धान

निकोबार द्वीप समूह का उप राज्यपाल

बन गए एच. दिनेश शर्मा के त्यागपत्र

से सीट रिक्त होने के कारण हो रहे हैं।

एक सीट सभा के राष्ट्रीय महासचिव

रमणगोपाल यादव व एक सरकारी

रामजी गौतम का कार्यकाय समाप्त होने



उत्तर प्रदेश में राज्यसभा की 10 सीटों के लिए चुनाव आयोग ने बोले शासन मजदुरों को लिखी घोषित कर दी है। मंगलवार को इधेके लिए नामांकन को प्रक्रिय शुरू हो जाएगी और 10 अक्टूबर को मतदान के साथ ही परिणाम का आ जाएगा। ये चुनाव भारत के सात सदस्यी-केंद्रीय मंत्री हरदिया सिंह पुत्र, केंद्रीय राज्य मंत्री बोल्लू कर्मा, संगठन में राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह, पूर्व प्रधानमंत्री प्रोफेसर के पुत्र नरेश शर्मा, उत्तर प्रदेश के पूर्व सीएम बजजाल, महिला कोष के सदस्य सोमा होली। खी इस चुनाव का सबसे विशेषता समाज हित और अंतर्धान निकोबार द्वीप समूह का उप राज्यपाल बन गए एच. दिनेश शर्मा के त्यागपत्र से सीट रिक्त होने के कारण हो रहे हैं। एक सीट सभा के राष्ट्रीय महासचिव रमणगोपाल यादव व एक सरकारी रामजी गौतम का कार्यकाय समाप्त होने

'माननीयों' का मिजाज बताएगा हवा का रुख



राज्यसभा की 10 सीटों के लिए उत्तर प्रदेश महासभा के सदस्य। फावल

समर्थन किया था। सभा के लिए यह बड़ा झटका था, क्योंकि सुभाषचंद्र बोले के बाद उसका तीसरा व अंतिम सदस्यो ग्लो भी सत्ताधारी के कबीर पहुंच गया था। यह अब तक प्रथम है कि पल्लवी पटेल सभा के पाले में हैं ही या नहीं। सभा के जिन अपने विधायकों हैं पातालविकार, उन्माद दल के मुखिया सचिव रहे और वर्तमान में प्रेक्षा सरकार में मंत्री मनोज पंडित भी थे। सभा इस पोट की अब तक सहला रही

है। यदि इस बार भी वह तीसरा उन्मादवात खट्ट करती है तो जो भी परिणाम आएगा, वह अगले साल की राज्यसभा में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव में उन्मादवात के पालाबदल और पक्ष-विपक्ष के सत्ताधिकार कोलम में आए बदलाव का भी संकेत देगा।

घोष और सभा का साह: समाजवादी पार्टी व कांग्रेस अगला विधानसभा चुनाव साथ मिलकर लड़ेंगे- इस रणनीति के बावजूद सभा और प्रेक्षा

संघीय कौंसिल नेताओं के गाढ़े-गाढ़े ऐसे बाजार आ जाते हैं जिससे यह सवाल उत्पन्न होता है कि विपक्षी गठबंधन कितनी दूर तक चलेगा और इसकी सीमाएं क्या हैं। गुजरात को सपा अध्यक्ष संजयलाल यादव ने अपना पोटोएर रुख सबसे पहले रायबरेली में छुआकर चुनाव प्रचार को शुरूआत की तो इसके संकेत पड़े जाने लगे। कौंसिल प्रेक्षाध्वज अजय राय और जवाब में आए शिवपाल यादव के बयान से 'कितनी दूर सख-सख' का प्रश्न फिर सतह पर आ गया। अजय राय ने कहा कि 'कोई भी चुनाव प्रचार के लिए पार्टी के हक में माहौल बनाने के उद्देश्य से कहीं भी जा सकता है। अखिलेश यादव रायबरेली में अमेठी जा सकते हैं और इसी तरह कौंसिल के नेता भी कानपुर, इटावा या सीधे जा सकते हैं। विधानसभा चुनाव को लेकर सभी दल तैयारी कर रहे हैं।' जिस तरह अखिलेश का रायबरेली जाना कौंसिल को अवरुद्ध, उसी तरह कानपुर और सीता में दूर तक? यह पल्लवी विधानसभा चुनाव के बाद ही सुलझना शुरू हो सकेगा।

व रैमर्र से कोई बोट नहीं मिलेगा। उन्हें आना चाहिए, उनका खगम हो।' हाल ही में कौंसिल संसद इमान मरुने ने सीट बंटवारे के सवाल पर कहा था कि 'बिना कौंसिल और राहुत गौरी की भाजपा को नहीं हराया जा सकता है', तो इसका जवाब सपा संसद इमान ने यह कहकर दिया कि 'उम्र में यदि भाजपा को कोई हरा सकता है तो वह अखिलेश यादव ही हैं। कौंसिल अपने दम पर उम्र में कुछ नहीं कर पाएगी।'

प्रश्न नहीं पर टेनें के बयान में कोई विधाभास नहीं है, लेकिन उन्माद डिगा तंत्र और आरक्षक सफ आवाज आती है। टेनें पॉलिटिक्स जान रही है कि अकेले विधानसभा चुनाव लड़ना बड़ा जुआ है, लेकिन यह भी जानती है कि कौंसिल यदि उत्तर प्रदेश में कुछ लायिक कर सकती है तो वह भाजपा-कांग्रेस से अधिक सभा की कोमल पर ही करेगी। कौंसिल का बैंक सखने व्याज सभा ने ही हड़वा भी है। ऐसे में फिलालत तो सभा-नखरों में, कौंसिल में दूर तक? यह पल्लवी विधानसभा चुनाव के बाद ही सुलझना शुरू हो सकेगा।

रेल परियोजना विस्तार से दुर्गम क्षेत्रों तक पहुंच आसान



दूरस्थ इलाकों तक ट्रेन पहुंचने से सभी के लिए यात्रा में हेतु सुगम। फावल

लंबे अरसे से माओवादी गतिविधियों के केंद्र रहे बस्तर ने अब विकास की नई गाथा लिखना शुरू कर दिया है। माओवाद से मुक्त बस्तर में अब विकास को दिशा में कदम बढ़ाएंगे। अब हम यह भरोसे के साथ कह सकते हैं कि यह दिन दूर नहीं जब बस्तर का नाम लुनोसगाढ़ के साथ हो देश और दुनिया में चमकेगा। अक्षय गतिविधियों के बस्तर को संभावनाएं मजबूत होतीं।

प्रदेश के उत्तरी इलाकों में भी रेल नेटवर्क के विस्तार पर जोर दिया जा

तक रेल पटरी पहुंचना केवल रेल कनेक्टिविटी का विस्तार नहीं है, बल्कि दूरस्थ अंचलों में विकास और आर्थिक गतिविधियों के विस्तार को दिशा में भी एक बड़ा कदम है।

बस्तर और दुर्गम लुनोसगाढ़ के अन्य दूरस्थ क्षेत्रों में बेहतर परिवहन सुविधाओं का विकास लंबे समय से महत्वाकांक्षी आवेक्यता रहा है। रेल कनेक्टिविटी बढ़ने से इन क्षेत्रों का संपर्क अन्य शहरों और बड़े बाजारों में मजबूत हो सकता है। इससे स्थानीय उद्योगों को व्यापक बाजार तक पहुंचाने और व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार में सहायता मिलने की संभावना है।

साथ ही, पश्चिम में रेल सेक्टर शुरू होने पर यात्रियों को भी आवागमन के अतिरिक्त विकल्प उपलब्ध हो सकते हैं। उन्मादी को जानी चाहिए कि दुर्गम लुनोसगाढ़ और बस्तर अंचल में पश्चिम को परिवहन सुविधाओं के साथ ही अक्षय गतिविधियों के विकास की संभावनाएं मजबूत होतीं।

प्रदेश के उत्तरी इलाकों में भी रेल नेटवर्क के विस्तार पर जोर दिया जा

इसी तरह बिलासपुर-झारसुगु चौबी रेल लाइन परियोजना के तहत 206 किलोमीटर में से 180 किलोमीटर का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। यह लुनोसगाढ़ और ओडिशा को कवर करती है। सारनाथ देवरी-बारास-जेठा-सर्वाती के बीच 22.2 किमी का नाम खंड पूरा होने के बाद सीआरएस (कमिशनर आवेक्यता रहा है। रेल कनेक्टिविटी बढ़ने से इन क्षेत्रों का संपर्क अन्य शहरों और बड़े बाजारों में मजबूत हो सकता है। इससे स्थानीय उद्योगों को व्यापक बाजार तक पहुंचाने और व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार में सहायता मिलने की संभावना है। साथ ही, पश्चिम में रेल सेक्टर शुरू होने पर यात्रियों को भी आवागमन के अतिरिक्त विकल्प उपलब्ध हो सकते हैं। उन्मादी को जानी चाहिए कि दुर्गम लुनोसगाढ़ और बस्तर अंचल में पश्चिम को परिवहन सुविधाओं के साथ ही अक्षय गतिविधियों के विकास की संभावनाएं मजबूत होतीं।

प्रदेश के उत्तरी इलाकों में भी रेल नेटवर्क के विस्तार पर जोर दिया जा

भा रत हमेशा से अपने पड़ोसियों के साथ शांति चाहता है। उसका विदेश नीति की महत्वपूर्ण विशेषता यही रही है कि वह शांति और

भ रत हमारा से अपने पड़ोसियों के साथ शांति चाहता है। उसके विदेशी नीति की महत्वपूर्ण विषयवस्तु नहीं है कि वह एक शांति और स्थिरता को महत्व देता है, लेकिन राष्ट्रीय नीति को उसके कोमत नहीं बर्ने देता। खास मीठी राजधानी स्थिति है। कश्मिर में इसे संतुलन को रेखांकित करता हुए कहा कि भारत शांति चाहता है। कांफ्रेंस में भारत को जमीन पर कब्जा करने की इच्छा नहीं रखता, लेकिन सन्धि से समझौता कभी नहीं करता। उन्होंने पाकिस्तान को संतुलित देना कहा कि यदि पड़ोसी देश आतंकवाद को बढ़ावा देता होगा तो आतंकवाद के खिलाफ हमारे सभी पड़ोसियों को संतुलित देना होगा। उन्होंने कहा कि हमारे सभी पड़ोसियों के साथ विश्वास खुले रहेंगे। रक्षासूत्र, भारत के सामने चुनौती केवल सीमा की सुरक्षा को नहीं है, बल्कि आतंकवाद के रूप में पूरे देश से निपटने के है जो हमें आज को जन्म देता है। आतंकवाद की भाँति, धर्मपराय को अलग कर दिया, शांति और स्थिरता को बढ़ावा देना चाहिए। केवल शांति आता ही हमले के बाद प्रतिक्रिया देना पड़ता नहीं हो सकता। स्थिति को लिए उन परिस्थितियों को भी रोना होगा जो आतंकवाद को बढ़ावा देती हैं। वही प्रक्रमणमोर्न नोट हमें भी "मम को का" 13वें काल में आतंकवाद के खिलाफ भारत की जोरि टोलरेन्स नीति का उल्लेख किया। उन्होंने 28-29 सितंबर 2016 को सर्फिजल कलकत्ता के दर पर पूरे होते के संघर्ष में भारत का संतुलित व्यवस्था से लेकर बलाकोट एयरस्ट्राइक और आरंभित सिंगुल तक भारत ने आतंकवाद के खिलाफ अपनी नीति का स्पष्ट संकेत दिया है। मजबूत सुरक्षा व्यवस्था का आरोपे हुए को बढ़ावा देना नहीं बल्कि देश की संरचना, भागीदारों और सीमाओं के शांति बनाये देना। उस समय से हिंसा और आतंकवाद का खतरा बढ़ता है जो बाबरपुर को प्रक्रिया में प्रभावित करता है। ऐसे में भारत के लिए उज्ज्वल है कि वह अपने सामने सुरक्षा के माध्यम से राखने के साथ-साथ कूटनीतिक स्तर पर भी संवाद और अंतरराष्ट्रीय सहायता के रास्ते खुले। उज्ज्वल और वाता साथ-साथ नहीं चल सकता। ऐसे में ध्यान रखना होगा। आज को सुरक्षा चुनौतियाँ भी बढ़कर चुकी हैं। युद्ध के काल में भारत अपने-आपने को लड़ाई तक सीमित नहीं कर सकता। युद्ध के काल में, क्रॉस ब्रिडजिंग, सुरक्षा युद्ध और गैर-पारंपरिक माध्यम सुरक्षा के नए आयाम बन चुके हैं। ऐसे में राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए हमें सशक्त के साथ तकनीकी और साधन बमबान बढ़ाने में जरूरी है। हमें हमें बदलती युद्ध के स्वरूप और आधुनिक तकनीक के अन्तर्गत सुरक्षा को जतन पर जोर देना है। आतंकवाद किसी एक देश की समस्या नहीं है। इराकियों विलियम नेटवर्क और अंतरराष्ट्रीय को एक के लिए देशों के बीच सुरक्षा बना करना और साहयोग बढ़ाव देना है। इस पूरे परिदृश्य में महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें सुरक्षा को कमजोरी समझने के बूल न हो और सुरक्षा को केवल सैन्य शक्ति से सीमित न किया जाए। भारत को हिक एके अपने वातावरण में न जल समायो सुनिश्चित हो, आतंकवाद पर प्रभावों को रहे, पड़ोसी देशों के साथ तनाव हो और विमर्श की प्रक्रिया बिना बाधा के हो। सफ़रशाशाशी को चाह न हो रहने चाहिए, लेकिन सुरक्षा से समझौता नहीं देना चाहिए। संवाद के रास्ते खुले रहें, कूटनीतिक प्रयास जारी रहें और श्रेयशायी शांति को बेमोहता हो रहे, लेकिन देश की सुरक्षा संरक्षण और आतंकवाद को खास सर्वोच्च प्राथमिकता में रहे।

हम स्वर्गीय अशोक सिंघल का जन्म-शताब्दी वर्ष मनाने जा रहे हैं। यह एक महान विभूति के सम्मान में अनुभवसर है। सिंघल जी ने अपने जीवन में हर क्षण इस महान राष्ट्र के उत्कर्ष का ही स्वप्न देखा था। उनके आदर्शों से आज भी हमें ये प्रेरणा मिलती है। उनकी जन्मशती के इस पावन अवसर पर हमने यह सोचविचार करने चाहिए कि अधिक से अधिक युवा उनके विराट व्यक्तित्व और महानता से परिचित हों। आइए, हम अपने राष्ट्र और देशवासियों के लिए सिंघल जी के सपनों का साकार करने के संकल्प को एक बार फिर दोहराए।

लोक कल्याण के लिए समर्पित 'युगपुरुष'

बीच भी उनका काफी सम्मान था। संतगण उनके परामर्श को महत्व देते थे और उनकी बातों को पूरे आदरभाव से सुनते थे। मेरी स्मृति में ऐसी दो घटनाएं उभर रही हैं, जिनसे सिंघल जी के विगत व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। पहली घटना 1993 की है। विश्व हिंदू परिषद ने स्वामी विवेकानंद जी के शिकागो संवेधन के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में अमेरिका में एक सम्मेलन आयोजित किया था। विदेश में ऐसे भव्य सम्मेलन का विजन, उसकी प्लानिंग और विभिन्न समूहों को एक मंच पर लाने का भूगोचर प्रयास अशोक जी के अद्वितीय संगठनात्मक कौशल का परिचयक था। दूसरी घटना



सन् २००० की वृद्धि निम्नलिखित आँकड़ों के पूरे आँकड़ों से प्राप्त की गई है। सम्पत्ति का आगोशान हुआ था, उस सम्पत्ति में भी वही था। मैं भी प्रत्यक्ष देखा कि सिपल जी की उपस्थिति में उस प्रतिनिधिमंडल में उन्होंने उत्साह भर दिया था। मैं भी सम्बोधन के बाद उन्होंने जिस तरह मेरी सादरता की, मैं भी ऐसा बहुत भावुक कर देने वाला अनुभव था। मैं एक बार अपने प्रमुख निष्कर्ष कि उनका प्रभाव किस्म तरह हर कार्यकर्ता को ईंट ईंटों से भर देता था। उनका जमीनी अधिकार में मिथिल जी को प्रतिस्पर्धात्मक भूमिका का स्पर्धा कि वह निम्नलिखित को उत्पन्न करता था। वर्ष १९९१ को भी बहुत स्थान देते हैं। ऐसा एक उत्तम अंशवर्ती सम्बोधन को को भी बहुत सक्ता है। या अधिकार के सम्बन्ध पर लालचवान और भावत उत्पन्न में अधिक जी की वृद्धि पेंडिंग। लालच तत्पर भला किसी स्मृति से मित सकत है। यह अनुभव में वृद्धि या माँद है, तो समझ के छोड़ें। अशोक जी जैसी विप्लव का निर्यात अशोक है, जिन्होंने ऐसे सम्बन्ध बना के प्रयास में हमारे वृद्धि को प्रभाव दिया। आदि आदि अधिकारी हैं हमारे वृद्धि होते तो आशोप्य में माँद मँदों को देखकर वो सम्बन्ध अधिक भावुक वृद्ध प्रमन होते। सिपल जी के विचार बहुत

सुलझें हुए थे। वे स्पष्ट रूप से मानते थे कि समाज में समरसता के साथ ही भाईचारे का संदेश मजबूत होना चाहिए। उन्होंने सामाजिक एकता और समानता के लिए निरंतर कार्य किया। उनका साफ मत था कि समाज में किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति समान गरिमा व सम्मान का अधिकारी है। यही वजह थी कि उन्होंने अस्पृश्यता में राम मंदिर की पहली ईंट रखने को लेकर अपने विचार को स्पष्ट रूप से रखा।

उन्होंने ही कहा था कि यह पुर्तगाल वहाँ के आने वालों को वापस जाने का पर्याय था और वॉचमैन वहाँ के अपने वालों को वापस भेजने का पर्याय था। वहाँ के लोगों में एक धर्म संस्कार के दौरान उन्होंने डीम रासम को सम्मानित करने का फैसला किया और डीम रासम का अर्थ होता है उनके साथ मिलकर काम किया। राष्ट्र-निर्माण के साथ ही मिलकर काम की दो ऐसे छिन्न क्षेत्र थे, जो उनके हृदय के अत्यंत निकट थे। शिक्षा (विशेषकर वैदिक शिक्षा) और संस्कृति, इन दोनों में उन्होंने बड़ा लगाव था। वाराणसी के संसद के रूप में मुझे इस बात पर अत्यंत गर्व की अनुभूति होती है कि जहाँ का मैं प्रतिनिधित्व करता हूँ उस शाश्वत काशी में संसद की के जीवन में एक अहम भूमिका निभाई।

उन्होंने बीचोबीच से शिक्षा प्राप्त की थी और वे एक मेधावी छात्र के रूप में जाने जाते थे। एकल विद्यालय की पहल से भी महाराष्ट्र में जुने जे. एस. एस. विद्वानों के गाँवों, खासकर जनजातीय समुदायों तक बुनियादी शिक्षा पहुँचाना का कार्य किया। वे जितने जगह अथेयता और अशिक्षा पाकड़ थे, उतने ही अच्छे जोशी भी थे। वे युवा कार्यकर्ताओं की मदद व प्रेरणा के पड़ने से लाने प्रेरित कर रहे थे। अशोक जी को निकट से जानने वालों को पता चल गया कि वे कितना सुंदर गाय थे। मुझे नागपुर की उन बैठकों की याद आती है, जिसमें वे एकल गाँव गया करते थे। उनका गायन सभी को मंत्रमुग्ध कर देता था और पूरे बैठक में 'नई ऊर्जा' भर जाती थी।

जुन 2015 में उनके 90वें जन्मदिन पर समारोह का एक वीडियो खुब वायरल हुआ था, जिसमें उन्होंने मातृभूमि में, 'हो पियल्लि मेरी' गानक सभी को चौंकाकर दिया था। सिम्लज जी ने अपने जीवन में हर क्षण इस महान आदर्श का ही स्पष्ट देखा था। उनके आदर्शों का राष्ट्र भी हमें ये प्रेरणा मिलती है। उनकी जायशरी के इस वीडियो को पानव अभिषेक पर हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अक्सर से अधिक दुवा उनके विराट व्यक्तित्व और महानता से परिचित हों। आइए, हम अपने राष्ट्र और देशवासियों के लिए, सिम्लज जी के सपनों को साकारा करने के संकल्प को एक बार फिर दोहराएं।

प्रेम पर उज्जयी परिकल्पित harishboom@gmail.com पर हमें बताएं हैं।

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

चुनाव आयोग में विवाद से मतदाताओं में टूटता भरोसा

भातीय व आर्यों में मुख्य चुनाव आयुक्त अनामिका झा और वरिष्ठ चुनाव अधिकारी के बीच मतदान को लेकर आई एक रिपोर्ट के बाद सभी के राजनीति में स्यामा विवाद खड़ा हो गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, चुनाव आयुक्त ने मतदाता सूची में नम नाम जोड़ने, नाम हटाने और बहाल करने, फॉर्म-6 में बहाल और मतदाता डेटा के प्रबंधन और मतदाता पर सवाल उठाए हैं। चुनाव अधिकारी ने मतदाता डेटा और चुनाव अधिकारी के केंद्रीकरण को लेकर भी प्रस्ताव जमाया है। सीमा बनाया चुनाव आयोग में आंदोलन और डिजिटल सिस्टम को मजबूत अधिकारी हैं। चुनाव आयोग में विवाद सीमाआंदोलन और छात्रांगों के जीएत मतदान के प्रबंधन को लेकर है। चुनाव आयुक्त सुखवीर सिंह सूर्य और विवेक जोषा समान उठाया है कि सीमा खाना के नेतृत्व वाला आंदोलन में जमीनी पर काका कानूनी बहाल इलेक्ट्रिकल गैरजिम्मेदार आगमिस्ट (इंशुरागमिस्ट) की पहल और उनके वैधानिक अधिकारी को शामिल करने गया है। रिपोर्ट के मुताबिक गठन में 97 मतदाताओं के मामले को सीमावर्ती इंडास्ट्री सूर्य पर जांच हो गई और मतदाता सूची में शामिल किए जाने के योग्य पात्र गया। लोकन सिस्टम नामों को अंतिम मतदान सूची में शामिल करने में सॉफ्टवेयर और डेटाबेस प्रणाली से जुड़ी समस्याएं आई हैं। इंडास्ट्री से मतदाता सूची सिस्टम में डालने से भी रहे हैं। सीमा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के दस्तावे में इस समस्या के समाधान और रोलबैक फैसलित उपलब्ध करने के लिए चुनाव आयोग को आम आदेश भेज दिया गया। वरिष्ठ केंद्रीय चुनाव आयोग की केंद्रीय से को कार्यवाही होती की गई। इस मामले में चुनाव आयुक्त अनामिका ने तत्काल सेक्टरों को भी पर लिखा था। हाहा के दिनों में निर्वाचन आयोग को लेकर टोटो पर बहस तेज हो गई है। फाला समान आयोग के मध्यस्थों को निष्पक्ष को प्रक्रिया को लेकर और दूसरा मतदाता सूर्य के एनआईआर को लेकर है। इसके साथ ही आयोग के भीतर निर्वाचन पर मजबूत को खबरों ने भी सीमा के आंतरिक कर्मचारियों और मध्यस्थों को भी पर को बढ़ावा है। भारत का निर्वाचन आयोग एक संघीयकारी संस्था है, जो संघीयता के अनुच्छेद 324 के वैधानिक नियमों और स्थापित संसदीयता परंपराओं के तहत और वैधानिक का चरित्व करता है। जो एक बहुराज्यीय संघीयकारी निगम के रूप में काम करता है। चुनाव करने वाली संसद पर उतार सवाल के कारण उभरे विधेयनविरोधी प्रभावों को भी है। लोकतांत्रिक में बहस मान्य था चुनाव अधिकारी विशेषतः शक्ति शक्ति के माध्यम से सरकार चुनने की प्रक्रिया नहीं है। चुनाव की पूर्ण व्यवस्था पर नागरिकों को मतदान के लिए निर्वाचन को बहालित करने हैं। वे चुनाव आयुक्तों द्वारा उठाए जा सकने के बिना लिए गए विधिगत हानि प्रतीतिगम्य है। एसआईआर को प्रभावित करे और अन्य चुनाव आयुक्तों की निष्पक्ष के लिए संसद द्वारा कोसे अंतर्गत कानून नहीं बनाया था। मार्च 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने अनुपम कर्नाटक बनाया भारत से मतदान में कड़ा था कि जब तक निर्वाचन आयोग कानून नहीं बनाती, तब तक निर्वाचन प्रक्रियाओं, लोकसभा में विपक्ष के नेता और भारत के मुख्य न्यायाधीश को सीमित को मतदान पर दोनों अधिकार न्यायालय व चुनाव आयोग को खरबतार को खरबतार एन निष्पक्ष चुनाव के लिए महत्वपूर्ण माना था। इसके बाद संसद ने 2023 में मुख्य चुनाव अधिकृत और निर्वाचन आयोग को निर्वाचन, संसद और कार्यपालक से संबंधित कानून बनाया। इस कानून में वयस सीमित में प्रभावशाली, लोकसभा में विपक्ष के नेता और प्रधानमंत्री द्वारा निर्वाचित केवर्नर सीमा को शामिल किया गया। लोकतांत्रिक में चुनाव करने वाली संस्था को निष्पक्षता का महत्व अविनाश अपेक्ष है क्योंकि चुनाव में सत्ता एक बार विपक्ष दोनों की राजनीति बहाल करने पर होती है। यही किसी चुनाव प्रक्रिया पर समान के एक बार विपक्ष को प्रभावित करके कमाओ पड़ता है, तो चुनाव प्रक्रिया संघीयकारी रूप से वेब होतों के बावजूद उनका संसदीय व्यवहारिता पर बहस शुरू हो सकती है। इसलिए निर्वाचन आयोग को खरबतार किसी एक दल को सुविधा या किसी दूसरे दल को शिकायत का विषय नहीं होना चाहिए। इस तरह मतदाता का प्रभार है क्योंकि लोकतांत्रिक विधेयनसत्ता कलर एस वाय से तय होती है। चुनाव आयोग पर इच्छा पर निर्भरता को हानि है। उसकी उन्मुखता इस विषया पर टिकी होती है कि हर प्राप्ति का वोट जलन हो, हर दल का समान सुविधा हो और चुनाव करने वाली संस्था किसी राजनीतिक संस्था से ऊपर सीमावर्ती के प्रति जवाबदेह हो। यही विधानात्मक को तयवै बड़ी उणी है।

[illegible]

अंतर्मन



आज की पाती 

मतदाता सूचियों में काट
छांट कितनी जायज?

सिपाई और केन्द्र सरकार के सिरोमी राजनैतिक दल एक बार फिर से एक-आपस के विचित्र में उतर आए हैं। काँग्रेस के मुखिया राहुल गांधी ने अब मुझे पर जो हल्ला कर रहे हैं। लेकिन उनका गान्धी से सवाल है कि जिन से जेल आजकल हो रहा है, तब से अब कितने लगभग 70 वर्षों तक सिपाई लोग जो उल्टी ही आई है, क्या वो भी मुकुल आयोग की कमिशन को छोड़ती है? दूसरी चीज अगर किसी का जमाना नयापन खुली में जाता है या किसी के पिता या जमा का नाम सिरोमी है, अगर किसी व्यक्ति को खुली हो गई है। लेकिन फिर भी उसका नाम नयापन खुली में है, या कोई कौन शिष्ट हो गया है तो क्या सिरोमी ने सुधार लगी होगा कहें? हालाँकि मुकुल आयोग को यह सुनिश्चित करना है कि किसी के जमाना नयापन ठीक से करें।

- शंकर कपूर, मुंबई

करंट अफेयर

श्रीलंका पुलिस ने जाफना में लिट्टे नेता की प्रतिमा हटाई

श्रीलंका पुलिस ने रावजर को आपत्ता के मद्द्तूर में प्रशिक्षित संगठन विलियम टादामर अर्थात् तील विलर (लिंग) के नेता रासेच पायिन उर्फ विलियम की प्रशिक्षण द्दता ११ अक्टूबर १९८१ को यह जानकारी द्दता ॥ पुलिस प्रवक्ता एच. टी. वल्लर ने बताया कि शिवायन म्मि की कि लिंग से जुड़े एक द्दवर्तन के लक्ष्मि में कार्यदम आरंभ किया गया है रहा है, जिनके प्रशिक्षण की प्रशिक्षण द्दता द्दती ॥ लिंग बताया है, संयुक्त देशों में भी प्रशिक्षण है ॥ विलियन ने समन जे जेन को भी प्रशिक्षण को तमिन प्रशिक्षण के प्रशिक्ष के रूप में कहा बताया है ॥ वह श्रीलंका के उत्तर पूर्व में अन्नावायदी प्रशिक्ष के दौरान लिंग के प्रमुख राजनीतिक नेताओं से एक है ॥ दस दिन एक अन्वयन के बाद २६ सितंबर, १९८१ को उन्वयती श्रीलंका में यह आपत्ता के मद्द्तूर ने ११ सितंबर से एक म्मिमांश शुरू हुआ ॥ दसरे पक्ष, विलियन चेल पर उन्वयती के संस्तरमा पर पुलिस की द्दक विलियन संगठन में शामिल लोग ने प्रदर्शन किया ॥ विलियन की म्मि प्रशिक्षण को अंतित में कई बार पुनर्स्थापन किया गया है और इच्छे लिंग सकाराती सैनिकों को जियमदर रह गया ॥ श्रीलंका ने वल्लर द्वारा १९८१ में प्रशिक्षण बताया ॥

ऑफ बीट

**बायोएक्टिव ही सब्जियों
के कड़वे स्वाद का कारण**

[illegible]

करने में किया गया। फिर मोदी और शह ने उन्हें अपाकर बनाया और भारत के चुनावों में 'नैप-फिक्सिंग' करने की जिम्मेदारी उन्हें सौंप दी।

एथलेटिक्स में भारत के लिए एक और गर्व का पल! एशियाई खेल 2026 में महिलाओं की हॉकी जप ने सिल्वर मेडल जीतने पर एसी सोजन एडमिली और फुरुषों की डेकारथॉन में गॉल्ड मेडल जीतने पर देवप्रिया शर्मा को बधाई।

लास्ट-माइल कनेक्टिविटी

DEVI बसों के जरिए, दिल्ली पब्लिक ट्रांसपोर्ट को उन इलाकों तक पहुंचा रही है जहां इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है, और 'लार्ज-गडल कनेक्टिविटी' को आसान, साफ सुथरा और ज्यादा सुलभ बना रही है। बेहतर कनेक्टिविटी वाली दिल्ली का संकल्प।

पहले जव मी सैम्युएलिक संस्थाओं मे कोई संस्था आती थी, तो सभी राजनैतिक दल उन्हें सुझाने के लिए एक सूत्र मे बात करते थे। पहली बार ऐसे व्यक्ति देख रहे हैं जहां वे पुनर्ग आयुक्त सूत्र में आयोग के समक्ष पर सामल उत्र रहे हैं।

- अशोक गहलोत, पूर्व सीएम, राजस्थान

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स :
0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से
hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

न्यायपालिकाको भे भेइस बाबत संसुलित हुटिकाको अपनया हो। सुप्रीम कोर्ट २०१८ के अगरे फैसला मे सस्प किका कि आधार को वैधान बाती रहेगी, लेकन उसे हर लेकन अलिया अन्यायी नती बानया जा सकता। अर्थात, समस्य फाफा फाफा प्रप नती हो, बलिक उसेक अनुचित या अल्पचित फाफा प्रप हो सकती। यस ठीक है कि प्रयोग को दस्तावेज मे नमान, नज्मातीय या बायोमेट्रिक जुटिये के कारण लोगो को अनुचितया होती है, पर एने अनुचितया समान्य खामियाँ है, जिन्कारो हुट किका जा सकता। यसकारन के आधार अपरेट केन, अनलाइन सुधार, मोबाइल पास सिधिर और दर्ताङन संगोशान जैसो ब्यवस्थाएं नती है, जिन्से नास्कारो को रहत मिल रही है और ये दावको फा लाभ उठा रहे है। यस नरक देखे

100



व्रत
त्योहार

नई दिल्ली
28 सितंबर : द्वितीया श्राद्ध, अश्विन शयन व्रत।
02 अक्टूबर : गोष्ठी जयंती।
03 अक्टूबर : अष्टमी श्राद्ध, जीवितपुत्रिका (जितिया) व्रत।
04 अक्टूबर : नवमी श्राद्ध।
06 अक्टूबर : इंदिरा एकादशी व्रत।
08 अक्टूबर : गुरु प्रवेश व्रत।
10 अक्टूबर : महालया पितृ पक्ष का समापन।
11 अक्टूबर : शारदीय नवरात्रि प्रारंभ / पट्टस्थापना।

7	14	21	28
1	8	15	22
2	9	16	23
3	10	17	24
4	11	18	25
5	12	19	26

पूर्वजों की पदचाप सुनने का पर्व है पितृपक्ष

शास्त्री कोसलेन्द्रदास

मनुष्य असंख्य पीढ़ियों से प्राप्त जीवन, संस्कार और संस्कृति का उत्तराधिकारी है। उसके अस्तित्व में पूर्वजों की देहधारा से बाहर आया प्राण प्रवाहित है। इसी बोध से पितरों की पूजा करने की यह उदात्त वैदिक व पौराणिक संकल्पना उद्भूत हुई, जिसमें श्राद्ध, कृतज्ञता, स्मृति और दायित्व एकाकार होते हैं। अतिप्राचीन शास्त्र परंपरा के अनुसार मनुष्य तीन ऋणों के साथ ही जन्म लेता है। ये हैं - ऋण-ऋण, देव-ऋण और पितृ-ऋण। ज्ञान और अध्ययन से ऋण-ऋण, यज्ञादि से देव-ऋण तथा संतानोत्पत्ति से पितृ-ऋण से उद्धार होने की याचना रही है। संतान केवल वंशवृद्धि नहीं, जीवन की अतिचिह्न कड़ी का संरक्षण है। यज्ञ में पति का साथ देकर वह देव-ऋण को चुकाने में सहायता होती है। संतान को जन्म देकर वंश-परंपरा को आगे बढ़ाती है। वंश परंपरा द्वारा पितरों के स्मरण और उनके पुत्रता का अनुभव किया जाता है।

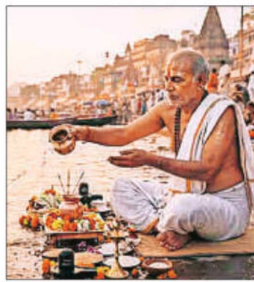
पितृपक्ष से श्राद्ध की परंपरा

पितृ-ऋण की चेतना श्राद्ध तर्पण आने पर मूर्त होती है। इसमें पितरों के निमित्त जल, अन्न आदि का श्राद्धपूर्वक अर्पण होता है। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में पितरों के सम्मान में श्राद्ध संपन्न होते हैं। इसमें मुख्यतः तीन पीढ़ियों पिता, दादा और परदादा के साथ ही माता, दादी और परदादी का स्मरण होता है और उन्हें जलांजलि दी जाती है। वहीं, मातृपक्ष के पूर्वजों यानी नाना और नानी के साथ ही परनाना और परनानी के लिए भी श्राद्ध करने का उल्लेख शास्त्रों में है। पितृ शब्द का अर्थ केवल पिता नहीं है। शास्त्रों में पितर शब्द निश्चित्य ही मृत पूर्वजों के साथ-साथ मानव-परंपरा के अधिपुत्रों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है, जो विशिष्ट लोक में प्रतिष्ठित हैं। इस प्रकार पितरों की अवधारणा परिवार की सीमा लोचकर समूची पूर्वज-परंपरा को अपने भीतर समेटती है।

पितर हैं वसु, रुद्र और आदित्य

मनु और याज्ञवल्क्य ने पितरों की दैवी व्यवस्था से संबद्ध किया है। पिता, पितामह और प्रपितामह वसु, रुद्र

परंपरा



और आदित्य के स्वरूप हैं। श्राद्ध केवल किसी मृत व्यक्ति के निमित्त अन्न या जल अर्पित करने का बाह्य कर्म नहीं है। उसके पीछे धारणा है कि पितरों के दैवी अधिष्ठाता अर्पित पदार्थ से संतुष्ट होकर पितरों की तृप्ति का माध्यम बनते हैं और श्राद्धकर्ता को आयु, संतति, संपत्ति तथा कल्याण के फल प्रदान करते हैं।

शास्त्रों में श्राद्ध की महिमा

नंद पंडित के श्राद्धकल्पलता ग्रंथ में श्राद्ध के औचित्य पर उठने वाली आपत्तियों का विस्तारपूर्वक समाधान है। यहां प्रश्न किया गया है कि यदि मृत व्यक्ति अपने कर्मनुसार किसी अन्य लोक में चला गया अथवा पुनर्जन्म प्राप्त कर चुका हो तो उसके निमित्त किया गया श्राद्ध उसे कैसे प्राप्त होगा? नंद पंडित की मीमांसा में श्राद्ध का संबंध केवल उस लौकिक शरीर से नहीं माना गया है, जो कभी किसी नाम से जाना जाता था। पितृकर्म में पूर्वज और उनके दैवी अधिष्ठाता दोनों की संकल्पना है। अधिष्ठाता देवता श्राद्ध से संतुष्ट होकर पितरों की तृप्ति का माध्यम बनते हैं। इस

अतीत के प्रति कृतज्ञता
पूर्वज पूजा को केवल कर्मकांड मान लेना उसके गहन सांस्कृतिक आशय को सीमित कर देना होगा। यह उन बुजुर्गों का स्मरण है, जिनसे हमें जीवन और संस्कृति मिली है। यह अतीत के प्रति कृतज्ञता का संस्कार है। पितृपक्ष इसी स्मृति को सामूहिक रूप देता है। जब कोई व्यक्ति अपने पूर्वजों का नाम लेकर उन्हें जल और अन्न अर्पित करता है, तब वह केवल दिग्गत व्यक्ति का स्मरण नहीं करता। वह अपने अस्तित्व की जड़ों का स्पर्श करता है। स्मृति के उस क्षण में मनुष्य अपने अतीत से संवाद करता है। पितृपक्ष मृत्यु का नहीं, स्मृति का पर्व है। विस्मरण का नहीं, कृतज्ञता का संस्कार है। यह बताता है कि हम जहां खड़े हैं, वहां तक अकेले नहीं पहुंचे हैं। हमारे पीछे अनगिनत जीवनों की पदचाप है।

प्रकार श्राद्ध का विधान दृश्य और अदृश्य, लौकिक और पारलौकिक के बीच एक सूक्ष्म सेतु की रचना है।

पितरों तक पहुंचता है तर्पण

माकेदंडे पुराण श्राद्ध में अर्पित अन्न के पितरों तक पहुंचने की बात एक अत्यंत मार्मिक रूप से समझाता है। जैसे असंख्य गायों के बीच बहजड़ा अपनी माता को पहचान लेता है, वैसे ही श्राद्ध में अर्पित पदार्थ अपने नियत पितरों तक पहुंचते हैं। इस उपमा में उस प्राचीन विचारस्य की झलक मिलती है कि श्राद्धपूर्वक किया गया अर्पण अपने नियत आध्यात्मिक गंत्य तक अवश्य पहुंचता है। शतपथ-ब्राह्मण में पितरों और देवताओं के स्वरूप का एक मनोहर अंतर मिलता है। पितरों के लिए प्रत्येक मास के अंत अर्थात् अमावस्या में भोजन की व्यवस्था की गई है और चंद्रमा को उनका प्रकाश माना गया है। देवताओं के लिए स्वाहा और पितरों के लिए स्वाहा बोला जाता है। ब्रह्मे में पितरों का स्वरूप केवल मनुष्य से संबद्ध नहीं है। उससे सौमनस्य, आनंद, संपत्ति और संतति को कामना की गई है।

राम ने पिता की मुक्ति को हरिद्वार के गंगा तट पर किया था श्राद्ध कर्म

सुनील दत्त पांडेय

पितृ पक्ष 26 सितंबर से शुरू हो गया है जो 10 अक्टूबर तक चलेगा। पितृ पक्ष में हम अपने पूर्वजों को यानी पितरों को जल के द्वारा तर्पण देकर उनको हृदय की गहराइयों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। धार्मिक मान्यताओं और पौराणिक कथाओं के अनुसार जेता युग में राम ने हरिद्वार के कुशावर्त घाट पर आकर पिता दशरथ और अन्य पूर्वजों एवं पितरों की शान्ति के लिए उनका तर्पण तथा पिंडदान यानी श्राद्ध किया था। कुशावर्त घाट दत्तात्रेय की तपोस्थली भी माना जाता है। द्वार युग में पांडवों द्वारा भी यहां अपने पितरों के निमित्त पिंडदान करने का वर्णन मिलता है। इस पवित्र पवन घाट की यह विशेषता है कि यहां पर गंगा के पानन तट पर कुशा और काले तिलों से तर्पण करने से पितरों को मोक्ष और शान्ति मिलती है। हरिद्वार में स्थित नारायणी शिला मंदिर पितरों की मोक्ष प्राप्ति के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक पवित्र पवन स्थल है। नारायणी शिला भगवान विष्णु का स्वरूप मानी जाने वाली एक बेदर पवित्र और प्राचीन शिला है, जो विशेष रूप से पिंडदान, श्राद्ध और तर्पण जैसे पितृ कर्मों के लिए देश-भर में प्रसिद्ध है।

नारायणी शिला मंदिर के मुख्य पुजारी प्रहलद मोहन कुमार त्रिपाठी का कहना है कि पौराणिक मान्यताओं के अनुसार गंगा में भगवान विष्णु के चरण, बलीयार्थ में उनका कपाल यानी शीश और हरिद्वार की नारायणी शिला में उनके कंठ से लेकर नाभि तक का मध्य भाग (धृष्ट) स्थित है। ऐसी मान्यता है कि इस नारायणी शिला मंदिर पर श्राद्ध के साथ पिंडदान या श्राद्ध करने से दिवंगत पूर्वजों और पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

हिंदू धर्म में विहार के गया जी को सबसे बड़ा पितृ तीर्थ माना गया है। धार्मिक मान्यता है कि हरिद्वार की नारायणी शिला पर अनुष्ठान करने से भी गया जी के समान ही पूर्ण फल प्राप्त होता है। पवित्र पवन नारायणी शिला स्थान का अन्न स्कंद पुराण और अन्य धार्मिक ग्रंथों में भी मिलता है। इस पवित्र स्थान के दर्शन मात्र करने से ही समस्त पापों का नाश हो जाता है। श्राद्ध के दिन भारद्वाजी के सातवें अध्याय का महात्म पदुकर फिर पूरे अध्याय का पाठ करना चाहिए एवं उसका फल मृतक आत्मा को अर्पण करना चाहिए।

गंगा, पुष्कर, प्रयाग और हरिद्वार में श्राद्ध करना श्रेष्ठ माना गया है। गोशाला, देवालय और नदी तट पर श्राद्ध करना श्रेष्ठकर माना गया है। श्राद्ध के दिन सोना, चांदी, तांबा और

पिंडदान



पवित्र पवन घाट की यह विशेषता है कि यहां पर गंगा के पानन तट पर कुशा और काले तिलों से तर्पण करने से पितरों को मोक्ष और शान्ति मिलती है। हरिद्वार में स्थित नारायणी शिला मंदिर पितरों की मोक्ष प्राप्ति के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक पवित्र पवन स्थल है। धार्मिक मान्यता है कि हरिद्वार की नारायणी शिला पर अनुष्ठान करने से भी गया जी के समान ही पूर्ण फल प्राप्त होता है। पवित्र पवन नारायणी शिला स्थान का अन्न स्कंद पुराण और अन्य धार्मिक ग्रंथों में भी मिलता है। इस पवित्र स्थान के दर्शन मात्र करने से ही समस्त पापों का नाश हो जाता है। श्राद्ध के दिन भारद्वाजी के सातवें अध्याय का महात्म पदुकर फिर पूरे अध्याय का पाठ करना चाहिए एवं उसका फल मृतक आत्मा को अर्पण करना चाहिए।

कांसे के बर्तन में अथवा पल्लाश के पत्तल में भोजन करना-कराना और उनमें उमम माना गया है। श्राद्ध के समय अक्रोध रहना, जलवायन न करना और बड़े लोगों को या बहुत लोगों को श्राद्ध में सम्मिलित नहीं करना चाहिए, नहीं तो इधर-उधर ध्यान बंट जाएगा, तो जिनके प्रति श्राद्ध सद्भावना और सत उद्देश्य से जो श्राद्ध करना चाहिए, वो फिर दिखावे के उद्देश्य से सामान्य कर्म हो जाता है।

देवभूमि की गोद में सुंदरनगर का महामाया मंदिर

प्रत्युष शर्मा

हिमाचल प्रदेश अनदि काल से ऋषियों की तपोस्थली और शक्ति के साक्षात् संचरण की पानन धरा रहा है। पहाड़ों की नीरता, देवदार के वनों से छनकर आती शीतल पवन और कल-कल बहती सरिताओं के बीच यहां का कण-कण ईश्वरीय चेतना से स्यादित प्रतीत होता है। मंडी जनपद की समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का एक प्रमुख केंद्र सुंदरनगर है, जिसे कभी सुकेत रियासर के नाम से जाना जाता था। इसी ऐतिहासिक नगर की सूर्ययुग वादियों में स्थित है महामाया मंदिर। देवगढ़ के पानन दिवस पर धर्म और अध्यात्म की दृष्टि से यह त्यक्त केवल वर्तमान मात्र का केंद्र नहीं, बल्कि शक्ति के विभिन्न रूपों और भारतीय स्थान्य के दुर्लभ समन्वय का साक्षात्कार करता एक ऐसा तीर्थ है, जहां पहुंचकर सांसारिक कोहलाल स्वतः शांत हो जाता है। महामाया मंदिर का संबंध तत्कालीन सुकेत रियासर के राजवंश से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक आख्यानों के अनुसार, सुंदरनगर जब सुकेत राज्य की राजधानी के रूप में स्थापित हुआ, तब शासकों ने राज्य की समृद्धि, प्रजा की रक्षा और आध्यात्मिक चेतना की संरक्षण हेतु कुलदेवी के रूप में मां महामाया की प्रतिष्ठा की। जनश्रुति और रियासती अभिलेखों में उल्लेख मिलता है कि राजा को स्वप्न में मां भावती के दिव्य स्वरूप के दर्शन हुए थे, जिससे वाद ईश्वर पर मां की मूर्ति की विधि-निधान से प्रतिष्ठापित किया गया। सुकेत के राजाओं के लिए मां महामाया केवल कुल की अधिष्ठात्री ही नहीं थीं, बल्कि राज्य की वास्तविक संरक्षिका मानी जाती थीं। किसी भी युद्ध, नीति-निर्धारण या शुभ कार्य से पूर्व

आस्था



राजपरिवार और प्रजा मां की चौखट पर शीश नवाकर आशीर्वाद प्राप्त करती थीं। रियासतकालीन वैभव के साक्षी के रूप में यह मंदिर आज भी तत्कालीन आस्था और निष्ठा का जीवंत प्रतीक बना हुआ है। हिमाचल के पारंपरिक मंदिरों की वास्तुकला समूचे विश्व में अपनी विशिष्ट शैली के लिए जानी जाती है। सुंदरनगर का महामाया मंदिर इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। यह मंदिर स्थानीय 'काठ-कुण्डी' और पहाड़ी शिखर शैली का एक संतुलित रूप प्रस्तुत करता है। काष्ठ नक्काशी और पुरातन कलाओं के अत्यंत सुकृष्टता से उकेरा गया है। गर्भगृह की आभा : मंदिर के गर्भगृह में स्थापित महामाया की पाषाण प्रतिमा अत्यंत तेजोमय और शांत भाव लिए हुए है। मां की आंखों में करुणा और वात्सल्य का ऐसा सजीव भाव झलकता है कि दर्शनार्थी स्वतः नतमस्तक हो जाते हैं। प्रतिमा का शृंगार पारंपरिक पहाड़ी वस्त्रों, आभूषणों और चांदी के छत्र से किया जाता है। प्रांगण और शांति : मंदिर

हिमाचल के पारंपरिक मंदिरों की वास्तुकला समूचे विश्व में अपनी विशिष्ट शैली के लिए जानी जाती है और सुंदरनगर का महामाया मंदिर इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। काष्ठ नक्काशी : मंदिर के मुख्य द्वारों, आंगणों और खिड़कियों पर देवदार की हृदय व सुगंधित लकड़ियों पर की गई महीन नक्काशी देखते ही बनती है।

परिसर की बनावट ऐसी है कि चारों ओर फैली हरी-भरी पहाड़ियों और नीचे घाटी के विहंगम दृश्य का सख्त अवलोकन होता है। सुबह और शाम के समय जब धूप की सुनहरी किरणें मंदिर की ढलवां छतों पर पड़ती हैं, तो समूचा वातावरण स्वर्णिम आभा से नहा उठता है। शक्ति उपसना की भारतीय परंपरा में देवी महामाया को आद्यशक्ति का स्वरूप माना गया है। वहीं महामाया जो सृष्टि के सुजन, पालन और संहार की अधिष्ठात्री है। सुंदरनगर के हिम मंदिर में शक्ति के वो प्रमुख रूपों-सीध व उग्र का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है। मंदिर में निर्य पुजन वैदिक और पौराणिक साहित्य विधियों से संपन्न होता है, परंतु नवरात्र अवसरों पर यहां प्राचीन कालीन पद्धतियों के प्रतीकात्मक अनुष्ठान भी देखने को मिलते हैं। मंदिर की दैनिक दिनचर्या ब्रह्ममुहूर्त में शंखध्वनि, छंटे-छंटे-छंटे की गूंज और मां की मंगला आरती के साथ प्रारंभ होती है। धूप और स्मिधा की संध्या से पूरा परिसर महक उठता है। हिमाचल के जनजीवन में मंदिरों की भूमिका केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक ताने-बाने के केंद्र होते हैं।



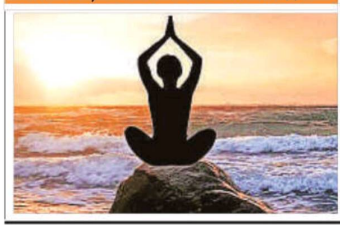
प्रयागराज में पितृ पक्ष के दौरान गंगा नदी के किनारे अनुष्ठान करते लोग।

विकारों से दूर रहकर आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता से जीवन जीएं

जनसत्ता धर्म दीक्षा

गीता के 13वें अध्याय का नाम 'क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विभाग योग' है, जिसमें शरीर (क्षेत्र) और आत्मा/परमात्मा (क्षेत्रज्ञ) के बीच के अंतर को समझाया गया है। यह भौतिक शरीर अनुभव का क्षेत्र है। यह पांच मायया (तन्त्री), अहंकार, बुद्धि, मन और इन्द्रियों से मिलकर बना है। क्षेत्रज्ञ (आत्मा) इस शरीर (क्षेत्र) को जानने वाली चेतन आत्मा या जीवात्मा है। जो व्यक्ति क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के इस भेद को स्पष्ट रूप से समझ लेता है, वह मोह और अज्ञान से मुक्त हो जाता है। आज के कार्पोरेट युग, सोशल मीडिया की आभासी दुनिया और मानसिक तनाव से भरे आधुनिक जीवन में इस अध्याय का संदेश बेहद व्यावहारिक और अक्षरें खोलने वाला है। इस अध्याय में कृष्ण कहते हैं कि यह शरीर एक क्षेत्र (मैदान या खेत) है और जो इसे जानता है, वह क्षेत्रज्ञ (ज्ञेय) है। हम अपने विचारों, तनाव और भावनाओं (जैसे गुस्सा, ईर्ष्या, अवसर) के साथ अपने जुड़ जाते हैं कि खुद को यही मान देते हैं। यह अध्याय सिखाता है कि आप अपने विचार या भावनाएं नहीं हैं, बल्कि आप उन्हें देखने वाले हैं। जब आप अपने अवसर या तनाव को एक साक्षी की तरह देखा शुरू करते हैं, तो मानसिक तनाव अपने आप कम होने लगता है। अध्याय की शुरुआत में अर्जुन कृष्ण से प्रकृति, पुरुष, क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ, ज्ञान

गीता सार, अध्याय 13 का संदेश



और ज्ञेय (जानने योग्य) के बारे में पृष्ठते हैं। कृष्ण इन सभी का विस्तार से उतर देते हैं। अहंकारहीनता, अमानिज (मान न चाहना), अहंकार, सननशीलता, सरलता और गुरु की सेवा इन गुणों को वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति का साधन बताया गया है। इस अध्याय में ज्ञान के लक्षणों को बताया

गीता के 13वें अध्याय का नाम 'क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विभाग योग' है, जिसमें शरीर (क्षेत्र) और आत्मा/परमात्मा (क्षेत्रज्ञ) के बीच के अंतर को समझाया गया है। इस अध्याय में गीता संदेश देती है कि असली मानसिक शांति बाहरी दिखावे या झूठी प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि सादगी और आंतरिक विहारी में मिलती है। यह अध्याय मनुष्य को 'मांडूक्य' लिपि' और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता सिखाता है। **वास्तविक** स्वरूप से अभिज्ञ होकर आप शरीर, मन और बुद्धि की विकृतियों और सीमाओं का ठोस स्वरूप पर मदते हैं और कष्ट भोगते हैं। पदार्थ होने के कारण शरीर, मन और बुद्धि संसार के प्रभावों से प्रभावित होते हैं। परन्तु आप आत्मा हैं। संसार की कोई भी वस्तु आपको प्रभावित नहीं कर सकती। आप संसार के स्वामी हैं। फिर भी आज आप संसार के शिकार हैं और कमजोर, शक्तिहीन हैं।

गया है, जिनमें सबसे पहले अमानिजन्म (विमनत्रा/पर्मंड न होना) और अदम्यमन (दिखावा न होना) आते हैं। आज की दुनिया दिखावे पर चल रही है। लोग दूसरों को प्रभावित करने के लिए वो चीजें खरीदते हैं जिनकी उन्हें जरूरत नहीं है। गीता संदेश देती है कि असली मानसिक शांति बाहरी

दिखावे या झूठी प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि सादगी और आंतरिक विमत्ता से मिलती है। विकारों से दूरी और भावनात्मक संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। आज इंटरनेट और विज्ञानों के युग में हमारी इच्छाएं असीमित हो गई हैं, जिससे फोमो (फियर आफ मिसिंग आउट) पैदा होता है। गीता हमें अपने मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना सिखाती है, जिससे हम तात्कालिक सुखों के पीछे भागने बंद कर सकें और जीवन में एक गहन संतुलन बना सकें। कृष्ण अवस्थिति (ममता या मोह न होना) और निय-अनिय को प्राप्ति में हमेशा समन्वित रहने की सच्चा बात बताते हैं। आधुनिक जीवन में छोटी-छोटी अप्रसन्नता, खेद, अप, या नीचरी का ज्ञान हमें इसी को तैय्य देता है। यह अध्याय सिखाता है कि जीवन में परिस्थितियों बदलती रहेंगी (कभी अनुकूल, कभी प्रतिकूल)। फिर हम अपनी खुशी को केवल बाहरी वस्तुओं से नहीं जोड़ेंगे, तो हम हर परिस्थिति में और स्थिर रह पाएंगे। गीता का यह अध्याय मनुष्य को 'मांडूक्य लिपि' और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता सिखाता है। यह हमें यह सिखाता है कि हम केवल शब्द-मांस का शरीर या समाज द्वारा दिया गया कोई 'टैग' (जैसे इंजीनियर, डाक्टर, प्रबंधक, अधिकारी) नहीं हैं, बल्कि हम उससे परे एक शुद्ध चेतना हैं। इस सत्य को जानने से जीवन का हर डर और तनाव समाप्त हो जाता है। मनुष्य पदार्थ और आत्मा का मिश्रण है। शरीर, मन और बुद्धि पदार्थ हैं। जो इस झुंझ पड़ाव में जीवन का संचार करके, वह आत्मा है।

Lifetime Free Newspapers Access

Editorials PDF

- English Editorials PDF with International Newspapers Editorials [35-40 pages]
- Hindi Editorials PDF
- Daily Vocabulary PDF

Magazine Channel

National & International
[General & Exam related]

International Newspapers

Newspapers around world.
Asian, European & American

Hindi Newspapers

- 1) दैनिक जागरण
- 2) जनसत्ता
- 3) हरिभूमि
- 4) हिंदुस्तान

Indian Newspapers Channel

1. The Indian Express

2. The Hindu

3. Business Line

4. Financial Express

5. Times of India

6. Hindustan Times

7. Economic Times

8. Live Mint

9. Business Standard

